मेरे जीवन मे परमेश्वर का हाथ

जिन रसेल की गवाही

मेरा और मेरे बहन का जन्म ऐरिजोना के छोटे से शहर में हुआ। मेरा जन्म सन् 1941 ई. के नवम्बर महीने में हुआ था। परमेश्वर की ओर मेरी लगन, मुझे याद है जब मैं किशोरावस्था में था और मेरे माता-पिता बैपटिस्ट कलिसिया में जाया करते थे। एक दिन मैं गाड़ी के पिछले सीट पर था उस वक्त मेरी उम्र तीन साल से कुछ अधिक रहा होगा। मैं पादरी को देखकर अपने माँ से कहने लगा - "वह यीशु है वह यीशु है।" उन्होंने सण्डे को स्कूल में यीशु के बारे में बताया था और मेरे तीन वर्षीय नन्हे दिमाग में यह बात थी कि वो एक धर्मी व्यक्ति है और मैं जानता था परमेश्वर की आत्मा

उसपर थी। मैं सोचता हूँ नन्हें बच्चे परमेश्वर की आत्मा को पहचान सकते हैं और अपने जीवन में उसके वर्ताव से जारूक रहते हैं। यह बहुत ही जरूरी है कि हम अपने जीवन में सही उदारहण बनाएँ ताकि बच्चे हमारे अन्दर मसीह को देख सके, ऐसा न हो, खुद हमारा अपना स्वभाव सबकुछ नाश कर दें।

मेरी माँ ने 18 वर्ष की आयु में ही, ठीक मेरी बहन के जन्म के एक वर्ष पहले, और मेरे पैदा होने के कई वर्ष पहले नया जन्म पा चुकी थी। मेरे पिता कलिसिया जरूर जाया करते थे परन्तु कभी भी उन्हो ने विश्वास नहीं किया। उनका बचपन बहुत ही कठिनाइयों से होकर गुजरा। मेरे दादा खुनी, जुआरी, पिअक्कड़ और पत्नी को सताने वाले में से थे। मैं जानता हूँ मेरे पिताजी कलिसिया के अनुसार चलना चाहते थे परन्तु उनके उपर शैतानिक श्राप थी जो पिता से पूत्र मे आता है। मेरे पिता के मृत्यू पश्चात् पादरी ने

मुझे बताया कि उन्होने मृत्यूशय्या पर यीशु को ग्रहण किया, क्योंकि बारह वर्षों से मैं उनसे न मिला था। हम स्वर्ग में मालूम करेंगे यह सत्य था या नहीं मैं जानता हुँ केवल यही रास्ता बचा था वापस आने का क्योंकि जब मैं बारह वर्ष का था वे परमेश्वर से दूर चले गये थे। मैंने इसका भयानक परिणाम देखा था जब मेरे पिता परमेश्वर से दूर हुए थे, यही कारण मुझे विपरीत दिशा में चलकर यीशु को गले लगाने के लिए विवश किया। मैं बारह वर्ष की आयु में ही सन् 1953 ई. मे इसाई हो गया।

शरीर की अभिलाषा ने मेरे पिता को परमेश्वर से दूर कर दिया। उन्होंने एक अच्छा सा घर खरीदा, और परिवार चलाने के लिए जो कुछ भी आवश्यकता होती है वह सब उनके पास उनकी इच्छा अनुसार था। हम एक अच्छे समाज में रह रहे थे परन्तु जब एक शिक्षक जो सुन्दर और जवान थी, जो मेरे

माँ से भी अच्छी थी, रास्ते से होकर अक्सर जाया करती थी। वे शरीर की अभिलाषा में खींचकर परमेश्वर से दूर चले गये। यद्यपि 1950 के दशक उस छोटे शहर में शक्तिशाली वेदारी आई हुई थी, मुझे याद है सैकड़ों पापी कलिसिया में आगे आकर विलाप करते क्योंकि पाप ने उन्हें कायल किया था।

जीवन आश्चर्य रीति से बदल रहा था, परन्तु मुझे यह भी याद है कलिसिया के अन्दर मैं अपने पिताके साथ पंक्ति में बैठा, उनमें प्रतिशोध को महसूस कर रहा था। प्रायः ऐसा लगता था शत्रु उनसे बातें कर रहा हो और वे सुन रहे हो।

आठ वर्ष की अवस्था में जब मैं उन सामर्थी सभा में बैठा करता, परमेश्वर सामर्थी रूप में मेरे अन्दर कार्य करता रहा, जबतक कि मैं अपना हृदय प्रभु को न दिया। उस वक्त मैं 12 वर्ष को हो गया था। दस वर्ष की अवस्था में भी मैं उन्हे जानने के लिए

काफी उत्सुक था, कि यदि मैं मसीह को नहीं अपनाउ, और यदि उसे अपनाए वगैर ही मर जाउँ तो मैं नरक में जाउँगा। मैं जानता था कि मैं अपना उत्तरदायी खुद हूँ और मैं पापी हूँ। मैं उस आयु तक अच्छी तरह से सुसमाचार सुन और समझ चुका था। मैं यह भी जानता था कि जो कुछ मैंने सुना है उसका जिम्मेदार भी खुद ही था।

परन्तु मैं युवास्था में कभी-भी स्थायी मसीही जीवन नहीं बिताया, पीछे देखकर मैं सोचता हूँ ऐसा क्यों था, और ईमानदारी से कह सकता हूँ कि परमेश्वर ने मुझपर भारी दया की है। मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर उन लोगों पर बढी दया करते हैं जो अपने जीवन में अधिक उपर आना चाहते हैं। मेरे परिवार में इतना ज्यादा शैतानिक दवाब था कि मैं बचपन से ही भयंकर स्वप्न देखा करता था। मैं नहीं जानता था कि यह दुष्ट का प्रभाव है परन्तु शैतानिक प्रभाव होने के

कारण मैं सीधा होकर चल नहीं सकता था। मैं लड़ाई की बर्बरता को नहीं समझ सका। जब परवार के कोई सदस्य, या परिवार के प्रधान शैतान के लिएर द्वार खोले, तो शैतानिक प्रभाव पुरे परिवार पर पड़ती है। जब मेरे पिता पड़ोस कि स्त्री के साथ व्यभिचार किया, मेरी माँ को घर से निकाल दिया - वह गाली देनेवाला बन गया और कई बार माँ को मार डालने की कोशिश किया जिसके कारण उन्हें कैलिफोर्निया भागना पडा। जिसने मेरी माँ और बहन के जीवन को बर्बाद कर दिया, उसके बाद वे लोग कभी कलिसिया के सदस्य न बन सके।

उनमें से एक दर्दमय यादें मेरे जीवन में है कि मेरी माँ और बहन परमेश्वर से बिल्कुल अलग हो चुके थे। मेरी माँ ने एक दुसरे गैरइसाई से शादी कर ली, यद्यपि वह बहुत ही अच्छा और दयालु था। वह फिर भी अभी तक गैर इसाई था। वह संगति में कभी भी

वापस नहीं आयी। तौभी वह अपनी जवानी में प्रभु से प्रेम करती थी, जब हम सभी परिवार एक साथ थे कलिसिया में प्रभु की सेवा करते और ढिलाई न करते हुए प्रत्येक रविवार को हमलोग कलिसिया में अवश्य होते। तौभी उसका गिर जाना और कलिसिया के दरवाजे से वर्षों तक दुर रहना मेरे लिए वर्णन करना बहुत ही दुःखदायी है। जब आप प्रभु को जानते हो, और आप अपने परिवार के सदस्यों के साथ संगति करना चाहते हो, और प्रभु का नाम लेते हो और वे कठोरता से मुड़कर श्राप दे और कहे कि तू अपना धार्मिक क्रियाकलाप अपने आप तक रखो, तो वह कितना दुःखदायी होता है।

मेरी बहन 22 वर्ष की आयु में तीन बार शादी कर तलाक दे चुकी थी। प्रत्येक बार वह माँ बनी थी। उनमें से केवल एक जीवित है, अन्य नष्ट हो गये। क्योंकि वह मेरे पिता की असभ्य गवाही माँ के प्रति देख चुकी थी,

और प्रेम को समझने के बदले अन्दर ही अन्दर दुषित हो चुकी थी। वह मेरे पिता से बहुत ही कड़वा और घृणा करती, क्योंकि जब वह स्कूल से आती, माँ को पिता के आगे जीवन की भीख माँगते देखती, जब मेरे पिता माँ के चेहरे पर बन्दुक रखकर जान से मारने की धमकी देते थे। यह मेरे बहन को कठोर बना दिया। वह एक तरफ पुरूषों से घृणा करती और दुसरी ओर प्यार की लालसा करती थी। वह प्रेम और स्वीकृति दोनों चाहती थी। यद्यपि उसने कही - वह अपना हृदय प्रभु को उसी दिन दे चुकी थी जिस दिन मैने दिया था, परन्तु यह ठोस समर्पण नहीं था।

मेरे पिता अपने जीवन में दस बार शादियाँ कर चुके थे। मैं नहीं जानता मेरी बहन ने कितनी बार शादियाँ कि। मैं छः बार को जानता हुँ जो हुआ उसका यह गवाही है कि वह वास्तविक प्रेम के विषय कुछ नहीं जानती थी। जब मैं यह सूचित करने को

फोन किया कि पिताजी मर चुके हैं, वह पिता को श्रापने लगी, मुझे भी श्राप दी और फोन रख दी। वह प्रतिभाशाली थी। वह वैज्ञानिक, गणितज्ञ या डाक्टर बन सकती थी। उसमें उस प्रकार के गुण मौजूद थे परन्तु उसकी मनोभावना उसके जीवन को नष्ट कर दिया। जब आप प्रभु को नहीं जानते, तो आप लोगों से प्रेम नहीं कर सकते और सही तरीके से जुड़ भी नहीं सकते, और हमेशा सही प्रबन्ध करने की कोशिश करते रहते हैं। इसी कारण मेरे माँ औरब हन के बीच का सम्बन्ध कठिन बना रहा।

मेरी बहन ऐसे व्यक्ति से अभी शादी की है जो बहुत ही अमीर है। मैं सोचता हूँ मेरी बहन अपने जीवन में काफी उन्नति की है, खासकर आर्थिक रीति से, जिस किसी से वह शादी की, उससे रूपया लेकर तलाक दे दी। यद्यपि वह उन दुःखी औरतों में से एक है जिससे शायद ही आप मिले हो, इसका पहला

कारण, पिता जो घर का मुखिया था, परमेश्वर के पीछे नहीं चला। उसने शैतान को आने के लिए घर का दरवाजा खोल दिया, और जब शैतान अन्दर आता है तो वह बिना लड़ाई किये नहीं रहता। उसे अवश्य ही परमेश्वर के सामर्थ द्वारा बाहर निकाल फेकना चाहिए और जब तक परमेश्वर के बातों को हृदय से लगाने की इच्छा नहीं होती तब तक हम बन्धुवाई में रहते हैं। मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर उस वचन का सम्मान करेंगे ताकि मेरा सम्पूर्ण परिवार बचे। और मेरे सभी रिश्तेदार प्रभु में आएंगे (प्रेरित के काम 16:31)। परमेश्वर के बिना क्या ही दुःख भरा जीवन इस पृथ्वी पर होता है, किन्तु केवल आग ही अन्त के दिनों में नरक से आपको बचा सकता है। परमेश्वर हमारी सहायता करें।

मेरे 19 वर्ष की अवस्था में परमेश्वर ने फिर से जीवन में कार्य आरम्भ किया। मेरा

सपना यू.सी.एल.ए. जाने का था, जो एक विख्यात विश्वविद्यालय है। मुझे क्या बनना या करना है मालुम न था, किन्तु उस खास विश्वविद्यालय में जाने का अवसर खोज रहा था, और मैं यू.सी.एल.ए. चला गया। मेरे पहले वर्ष में मैं बैपटिस्ट विद्यार्थीयों की सभा में गया, कैनसास के सेमिनरी से मुझे पपत्र मिला जिसमें मुझे आकर पढ़ने की, छात्रवृति देने की बात लिखी थी।

किसी ने उस सेमिनरी से सम्पर्क कर कहा कि इस युवक को सेविकाई के लिए बुलाया गया है। मेरे अंदर परमेश्वर के काम करने का गहरा समर्पण नहीं था, और मैने उसे अस्वीकार कर दिया। विश्वविद्यालय की पढ़ाई के दौरान मैं सांसारिक वातावरण से काफी प्रभावित था और मैं यह कहते हुए पत्र लिखा कि - मैं यह विश्वास नहीं करता हूँ कि कलिसिया के पास सारी बातों का जबाब अब रह गया है। मैं विश्वविद्यालय की पढ़ाई जारी

रहते हुए बैचलर और मास्टर की डिग्री यू.सी.एल.ए. से प्राप्त किया। मैं इन्टरयुनिवरसिटी क्रिश्चियन संगति का एक अंग था, और दुसरे क्रिश्चियन से सम्पर्क बनाना मुझे अच्छा लगता था। परन्तु मैं यह सल्लाह देना चाहता हूँ यदि किसी व्यक्ति को परमेश्वर बुला रहे हो, तो वह अपना जुआ उठाकर अपने जीवन के हर परिणामों के लिएर परमेश्वर पर सम्पूर्ण भरोसा रखें। क्योंकि जब मैने विश्वविद्यालय को पुरा किया, और अन्त में पी.एच.डी. की उपाधि लेकर अंग्रेजी का प्रोफेसर बन गया। मुझे मालुम न था कि मैं प्रत्येक दिन गहरे अन्धकार की ओर बढता चला जा रहा हूँ। आखिर में मैं परमेश्वर से काफी दुर हो गया और लगभग दस साल तक कलिसिया में न गया। वह सब समय बेकार चला गया। मैं समझ न सका जब बौद्धिक कचरा में फँसता गया और शैतान मेरे जीवन को बर्बाद करने, और

परमेश्वर के सारे योजनाओं को बर्बाद करने के लिए मुझे उपर उठाता गया।

मैं महाविद्यालय का एक सफल प्रोफेसर बन गया परन्तु मैं दुसरे लागों के साथ मिल कर धुम्रपान करना शुरु किया, और मैं उन लोगो का मुखिया बन गया। नहीं पढ़ाने के कारण मुझे नौकरी से हाथ धोना पड़ा। मैने यह सोचना छोड़ दिया कि मैं बहुत अच्छा शिक्षक हूँ और अपने मेहनत के बल पर फिर से वापस आ सकता हुँ। शिक्षा से अलग होने के दो साल बाद मेरा कैरियर बिल्कुल बर्बाद हो गया, मुझे 20 साल तक दुःख उठाते रहना पड़ा जब तक कि परमेश्वर फिर से मुझे शिक्षा के कैरियर को पुनर्जीवित न किया। मुझे अपने जीवन में बहुत संघर्ष करना पड़ा। ऐसा इसलिए हुआ कि मैने कभी भी परमेश्वर के बुलाहट को गम्भीरता से नहीं लिया। जैसाकि मैने कहा - मैं सोचता हूँ परमेश्वर ने मुझ पर बड़ी दया की, क्योंकि मुझे अपनी अज्ञानता

तथा जीवन के बहुत से बातों में विजय पाना था।

मैने मास्टर की डिग्री प्राप्त करने के बाद शादी कर लिया। मैं एक साल तक ऐरिजोना स्टेट विश्वविद्यालय में पढ़ाया। उसके बाद मैं अमेरिका के पाँचवे रेंक के ग्रेजुएट संस्था में पी.एच.डी. करने चला गया। उसके बाद यूरोप के स्पेन में एक प्रतिष्ठित संगति में सिखाया और फिर अमेरिका वापस आ गया। परन्तु उस दौरान मेरी शादी टूट चुकी थी। मैने एक क्रिश्चियन लड़की से शादी किया था क्योंकि उसकी माँ कलिसिया की सबसे अच्छी मसीही थी। वह बहुत ही सुन्दर लड़की थी और मेरे अन्दर गलत धारणा थी कि बेटी अपनी ही माँ की तरह होगी। मैं अपनी आत्मा में समझ सकता था यह सही नहीं था परन्तु मैने अपनी आत्मा की नहीं मानी। मैं पवित्र आत्मा से नहीं भरा था, और सचमुच नहीं जानता था परमेश्वर की गवाही होने का

मतलब क्या होता है। परमेश्वर मुझे बहुत रोकने की कोशिश की परन्तु मैं जानता था यदि एक बार समर्पण करने का मतलब है उस प्रकार चलना।

मैं साढ़े पाँच साल तक नरक में जीता रहा। जिस चीज को मैं त्यागना चाहता, जैसा अपने माता-पिता की तलाक को देखा, वही मेरे साथ हुआ। मैं परमेश्वर से दुर चलता रहा यही भी एक कारण था क्योंकि मैं पहली शादी से काफी निराश और टूट चुका था। दस साल तक मैं परमेश्वर से दुर चलता रहा। जब आप नहीं समझ पाते कि अन्धकार में कितना दुर है और चलते जाना है तो यह जीवन का बहुत दर्दमय समय होता है। क्योंकि मैं इतना सताया गया था कि आत्मिक रीति से चिन्तित था और हिन्दु धर्म को अपना लिया। मैं उस प्रकाश को ढुढने लगा जैसा सोचा था परन्तु जब आप दुश्मन के धोखे में इतने दुर होते है कि समझ नहीं पाते रोशनी

कहाँ है। मै. योगी के पास जाकर योगा का अभ्यास करने लगा और किस तरह आराम मिले सीखने लगा। मैं छोटी काली मुर्तियों के आगे घुटना टेका और हत्या को छोड़ सारी आज्ञाओं को तोड़कर अपने ही भावनाओं को ठेस पहुँचाया। परमेश्वर का आश्चर्य कर्म ही मुझे इससे बाहर निकाल सका। परमेश्वर ने मुझे फन्दे के अन्त तक जाने दिया जहाँ एक रात नेवरास्का नदी के किनारे शैतान से भिडंत हुई जब भारत से वापस लौटा।

परमेश्वर ने मुझे अन्तिम चेतावनी दी, और यद्यपि उसने कभी आवाज देकर बात नहीं किया, जब परमेश्वर चाहते हैं कि आप कुछ जाने, आप को साफ संदेश मिलेगा। उस रात मैं जानता था मेरे हृदय में वह कह रहे थे, "जीन अब तक मैने तुम्हे सम्भाल कर रख सकता था, रखा है यदि तुम एक भी कदम इस दिशा की ओर बढ़ाओगे तो मैं सदा के लिए तुम्हें जाने दुंगा"। मैं जानता था वह ही

अन्त था।

परमेश्वर की प्रशंसा हो, सभी लोग मेरे लिए प्रार्थना कर रहे थे, मेरा परमेश्वर के पास वापस लौटना और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना एक चमत्कारिक कहानी है। स्पेन से वापस लौटने के बाद नेवरेस्का के विश्वविद्यालय में पढ़ाना शुरू किया, मैं अमेरिकन नोबेल कोर्स पढ़ाया करता था औ जहाँ एक मसीही महिला थी जो मेरे लिए प्रार्थना करने लगी। वह गवाही देती और मेरे पास आकर कहा करती थी, "मिस्टर रसेल, मैं सोचती हूँ जो बातें तुम बताते हो परमेश्वर की ओर से नहीं है। क्योंकि उस समय क्लास में मैं केवल पूर्वी ध्यान और मनन की बातें किया करता था। वे चार साल तक जब मैं अन्धकार की गहराई में था हर सप्ताह प्रार्थना करता रहा। मुझे याद है, भारत में एक खोजी के रूप में भटकते हुए, अन्धकार से भरे कमरे में ध्यान करने के लिए जाता परन्तु मुझे जाने

नहीं देते क्योंकि वे लोग मेरे लिए प्रार्थना कर रहे थे। मैं जानता हूँ जिस रात शैतान से मेरी सामना हुई थी कोई अन्तरविनती करनेवाला मेरे लिए प्रार्थना कर रहा था अन्यथा मैं उस से नहीं निकल पाता।

एक बार मैं एक कलिसिया में गया जहाँ का पादरी बेपटिस्ट मिनिस्टर था परन्तु उसे पवित्र आत्मा का अभिषेक मिलने के कारण कलिसिया से बाहर निकाल दिया गया। यह 70 शुरुवात की बात थी उसके पास एक सफल कलिसिया थी। मुझे याद है जब मैं विश्वविद्यालय का विद्यार्थी था किस प्रकार पेन्टिकोस्टलों के उपर हँसा था। एक जवान व्यक्ति जो पेन्टिकोस्टल था मुझे बताने की कोशिश करता रहा कि उससे और भी अधिक है और मैं कहा करता, "अच्छा मेरे पास जो है उससे मैं खुश हूँ"। आपके पास जो कुछ है यदि उससे आप खुश हैं इसका मतलब शायद प्रकाश से भयभीत हैं या अन्धकार से

खिलवाड़ करते हैं और बहुत से प्रश्न हैं जिसका उत्तर आपको देना है। समय छोटा है; और हम जो कुछ करते हैं उसका उत्तरदायी है। इस कलिसिया में स्तुति आराधना के बाद लोग चारों ओर घुमकर हर लोगों को अभिवादन करते हैं जो उनके अगल-बगल हैं। जब मैं अपने बाँये कोहनी पर किसी के हाथ का स्पर्श महसूस किया और मैं पीछे की ओर मुड़ा, वही औरत थी जो चार वर्षों से मेरे लिए प्रार्थना कर रही थी। उसने कही, "क्यों मिस्टर रसेल, क्या अन्त में अपना सिर सीधा करना पड़ा?" मैने हँसते हुए कहा, "हाँ मैने किया"। उसने कही, "मैं चाहती हुँ कि तुम उन औरतों से मिलो जो चार सालों से तुम्हारे लिए प्रार्थना कर रही है"। यह एक अद्‌भूत आशीर्वाद है जो प्रार्थना करनेवाले पाते हैं। एक दिन परमेश्वर उनकी प्रार्थनाओं के फल को दिखाएंगे। मैं उन लागों को चाहता हूँ और कभी भूल नहीं सकता जो उन लोगों

ने मेरे लिए किया, क्योंकि शायद उन्होंने मेरी आत्मा को बचाया। अगले सप्ताह में मैं उनके प्रार्थना सभा में गया और उन पाँचों से मिला। अद्भूत, क्या अद्भूत बात है, वह मेरे लिए परमेश्वर के साथ वास्तविक रूप से चलने का शुरूवात या आरम्भ था।

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने और संगति में वापस लौटने के बाद, मुझे बेकार किये गये समय, झुठे देवताओं के आगे झुकने और उन सारे चीजों, जिसे परमेश्वर ने निकालने की कोशिश की, जिसमें मैं सम्मिलित था, से पश्चाताप होने लगा। मैं ज्योतिष विधा, हस्तरेखा विधा, मुर्तिपुजा, जादुटोना और कई प्रकार के ऐसे कार्यों में लिप्त रहा क्योंकि मेरे अन्दर आत्मिक भूख थी। मैं सच्चाई को जानना चाहता था, परन्तु मैं इतना अंधकार में था कि ढूढ़ न सका। जब मैं वापस लौटकर आया, मुझे उन सारी बातों के लिए पश्चाताप होने लगी, और मैं परमेश्वर के

काफी निकट होकर चलना चाहता था क्योंकि मेरे वापस आने के पाँच साल तक, अलौकिक रीति से परमेश्वर के साथ चल रहा था। मैं उसका आवाज सुन सकता था, और मैने कभी संदेह नहीं किया क्योंकि उसने जो मेरे लिए किया मैं जानता था। उसका वचन मुझ में जीवित हो गया, और यह बाइबल के पन्नों में सिर्फ छलांग लगाना नहीं हुआ। मैं बाइबल कॉलेज अपनी आत्मा को वचन से तृप्त करने के लिए वापस जाना चाहता था। परमेश्वर के साथ मेरा गहरा आत्मीयता था जैसा मैं पहले इच्छा रखता था, और मैं विश्वास रखता था जो मैंने सोचा कभी न टूट सकेगा। परन्तु, जब कभी परमेश्वर काम करते हैं, शैतान भी काम करता है, और मैं एक बार फिर जालसाजी के लिए गिर गया जब बाइबल स्कूल में था। वहाँ एक सुन्दर स्त्री थी, मुझे उसके माता-पिता से पहले प्रेम हो गया क्योंकि वे मेरे सहपाठी थे, और वे काफी

आत्मिक थे। ऐसा लग रहा था कि जिस वस्तु एक आत्मिक परिवार और ईश्वरीय लोगों का बड़ा परिवार कि इच्छा रखी थी मिलनेवाला था। उसके सभी भाई और बहने सचमुच समर्पित और आनन्द से भरे मसीही थे। परन्तु यह ठीक नहीं था और जिसे परमेश्वर ने ठीक नहीं किया उसे आप ठीक नहीं कर सकते। फिर से मुझ में परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता में कमी हुई, और मैं अपने तरीके से कार्य करने की कोशिश करने लगा यदि आप अपने ही तरीके से काम करने की हठ करते हैं आप आज्ञाओं में से एक को तोड़ते हैं जो पौलुस ने तीतस की पत्री में लिखा है। यदि आप अध्यक्ष बनना चाहते हैं तो सबसे पहली योग्यता यह है कि आपको हठी नहीं होना चाहिए। प्राचीन को परमेश्वर का भण्डारी होने के कारण निर्दोष होना चाहिए न हठी ... (तीतस 1:7)। जीवन के यदि एक भी क्षेत्र में आप हठी हैं, परमेश्वर जो कुछ करना चाहता है उसे आप

खत्म कर सकते हैं। भावनात्मक रूप से जुड़े रहने के परिणामस्वरूप मुझे कई आन्तरिक चोट मिली क्योंकि पारिवारिक परिस्थिति मेरे आँखों के सामने थी। उसके माता पिता उस औरत की तरह ही मेरी ओर मुड़ा और मैं घायल होकर वहाँ से चला गया जैसा कभी मेरे जीवन में न हुआ। मैं सदा जल्द ही क्षमा करता था, और मैं शोक/चोट से जल्द ही उबड़ने वाला व्यक्ति था परन्तु कई वर्षों तक मैं इतना चोट पाता रहा कि लोगों को भी देखना नहीं चाहता था। मैं अन्ततः सामाजिक जीवन से दूर रहने वाला बन गया। मैं काम नहीं पा सका, और मैं पूर्णतः भूखा था। मुझे याद है कुड़ा कड़कट के डिब्बे से जुठन खोजने के लिए गली मे भटका करता था। मैं स्कूल में जाता ताकि बच्चों के फेके गए सैण्डविच और फलों को खोज कर खा सकूँ। मैं बहुत ही कड़वा और कठिन समय से होकर गया। मैं सोचता हूँ परमेश्वर ने मुझे दुःख

भोगने दिया ताकि मैं उनलोगों के लिए, जो नीचे और निकाले गये हैं उनपर दया रख सकूँ। मैं सचमुच समझ सकता हूँ बिना घर का रहना, बिना काम का रहना, काम न ढूढ़ पाना कैसा होता है। शुभ समाचार यह है कि जब आप परमेश्वर को गंभीरता से ढूढ़ रहे होते हैं तो वह आपको नहीं छोड़ता है।

एक-एक कदम कर, एक एक साल कर परमेश्वर ने मुझे वापस स्थिरता की जगह लाया, यद्यपि मैं बहुत बड़ी तिरस्कार से होकर गुजरा, क्योंकि इस समय तक मैं आधा आयु का व्यक्ति हो गया था जिसके पास कुछ नहीं था। क्या आप सोचतें हैं कि अधिकतर औरत जो युवा है और अपने साथी की तराश कर रही हो, बुढ़े व्यक्ति को ढूढेगी, जिसके पास कुछ नहीं है? जो अलौकिक या प्राय भयानक दिखता है क्योंकि उसके पास पी.एच.डी. की डिग्री है परन्तु वह अपनी जीविका भी नहीं चला सकता। तौभी परमेश्वर ने अन्त में एक

महिला को मेरे जीवन में लाया। परमेश्वर ने मेरे जीवन में ऐसे महिला को लाया जिसने परमेश्वर के सामर्थी हाथ को मेरे जीवन में देख सकी।

उसने बुलाहट को देखी और मुझ पर विश्वास की, हम वियतनामी बैपटिस्ट कलिसिया में स्वयं सेवी के रूप मे काम करने के कारण मिलें। मिशन में उसकी बुलाहट थी और मेरे पास भी बुलाहट थी क्योंकि जब मैं कॉलेज में था उसी समय मैक्सिको के लिए मिशन कार्य शुरू किया था, और सच्चाई यह है हमारी शादी के बाद पहला मिशन ट्रिप्स एक सप्ताह के लिए मैक्सिको में ही गया।

मैने 1994 में गेल से शादी किया, औ हमारे जीवन के सात साल एक साथ रहने के दौरान, परमेश्वर ने विश्व के पाँच देशों में मिशन कार्य के लिए ले गया। उसने मेरी पढ़ाने की पेशा को फिर से पुनर्स्थापित किया, क्योंकि मेरे पास जो शिक्षा थी उसका महत्व

को उन लोगों ने समझा। इसलिए मैं इण्डोनेशिया, चाइना और ताइवान में जा कर पढ़ा सका। जब मैं न्यूजिलैण्ड में आया, चाइनिज विद्यार्थीयों को अंग्रेजी दुसरी भाषा के रूप में पढ़ा सका। अब मैं सेवानिवृति आयु में पहुँच रहा हूँ, परन्तु अभी भी मेरे पास सभी बनाने के कौशल हैं जो परमेश्वर ने मुझे इन वर्षों में दिये हैं। इसलिए मैं जानता हूँ कि परमेश्वर सिर्फ मेरे जीवन में ही नहीं, परन्तु सोचता हूँ कि यदि कोई इसे पढ़ता है या इस गवाही को सुनता है और युवक है अपने जीवन में सफलता चाहते हैं, यदि आप जीवन में परमेश्वर के आशीर्वाद चाहते हैं, तो केवल एक ही रास्ता है। वह बाइबलीय रास्ता है। यह ठोस नेव पर बना है। पौलस ने कहा कि उसने प्रभु यीशु मसीह की नेंव को डाला है। आपको उस नेंव को अपने जीवन में डालना होगा, और सब कुछ आप उस पर बनाएँ, स्थिरता, सावधानी और स्थायी बनानी

चाहिए। जब ऐसा होता है आप तुरन्त सफलता नहीं देखेंगे परन्तु यदि आप परमेश्वर के तरीके से काम करते हैं तो उसका फल अन्त में बड़ा होता है, आपके पास न चाहने से कहीं ज्यादा सम्पति और धन होगी जिसका शायद ही आप अन्दाजा लगा सकते हैं।

मैं जानता हूँ क्योंकि मैने शारीरिक प्रयास किया, मिशन कार्य की सच्चाई जो हमने किया यद्यपि मैने पुलपिट कि सेवकाई कभी नहीं किया जब से पवित्र आत्मा का अभिषेक पाया, यही कोइ 27 वर्ष पहले - मैं जानता हूँ कि वापस परमेश्वर के रास्ते पर हूँ परमेश्वर ने मुझे संसार के अलग-अलग लोगों तक अपने सच्चाई को बताने की इजाजत देकर बहुत आशीर्वाद दिया है। मैं यह सम्पति एक दिन लेकर रहुंगा। यदि यह गवाही किसी को मद्दद करती है, यही तो इसका उदेश्य है। युवक लोगों को परमेश्वर के मार्गों पर चलना

है और कोई छोटा सीधा रास्ता नहीं है। यदि आप को दुःख उठाना पड़े तो इसे अच्छे सिपाही की तरह लें क्योंकि यदि धीरज रखेंगे तो तरक्की मिलेगी। परमेश्वर आपको बहुत बड़ा ईनाम देंगे यदि यीशु को अपना जीवन समर्पण करें और उससे कभी भी इधर-उधर न मुड़ें।

परमेश्वर के हाथ को अपने जीवन में स्वीकार करें।

1. परमेश्वर में विश्वास -

विश्वास के द्वारा हनोक इस जीवन में उठा लिया गया, जिसके कारण मृत्यु का अनुभव नहीं पाया। उसे खोज नहीं पाया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया। उसे उठा लिये जाने के पहले वह परमेश्वरको को खुश या प्रसन्न करने वालों में सराहा गया। विश्वास बिना परमेश्वरको खुश करना अनहोना है क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवालों को यह विश्वास करना चाहिए कि

वह है और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है।

2. पाप से मन फिराकर परमेश्वर की ज्योति में चलना -

क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, अतः ज्योति की सन्तान के समान चलो क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, और धार्मिकता और सत्य है और यह परखो कि प्रभु को क्या भाता है अन्धकार के निष्कल कामों में सहभागी न हो, वरन उन पर उलाहना दो। क्योंकि उनके गुप्त कामों की चर्चा भी लज्जा की बात है। जो शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।

3. यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता कर पुकारें -

और उन्हें बाहर लाकर कहा, "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा। क्योंकि जो कोई प्रभु

का नाम लेगा वह उद्धार पाएगा।Æ

4. बाइबल में विश्वास करनेवाली अच्छी कलिसिया ढुढ़े और प्रत्येक समय कलिसिया में जाए -

वे प्रेरितों से शिक्षा पाने और संगति रखने में कॉलीन रहे और एक दुसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़े, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दुसरे को समझाते रहें और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो त्यों त्यों और भी अधिक यह किया करो।

5. आपके इर्द गिर्द रहनेवालों के लिए प्रार्थना तथा अन्तरविन्ती करें -

"अब मैं सब से पहले यह आग्रह करता हूँ कि विनती, प्रार्थना, निवेदन, और धन्यवाद सब मनुष्यों के लिए किया जाए। राजाओं और सब उँचे पदवालों के निमित इसलिए कि हम विश्राम और चैन के साथ भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएँ। यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वरको अच्छा लगता है और

भाता भी है, जो यह चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो और वे सत्ये को भली भाँति पहचान लें।Æ

6. परमेश्वर के वचन का अध्ययन करें -

परन्तु उन बातों पर जो तुने सीखी है और विश्वास किया है, यह जानकर दृढ़ बना रहा कि तू ने उन्हें किन लोगों से सीखा है, और बचपन से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है। सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, समझाने, सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।

7. इस शुभ समाचार को दुसरों के साथ बाँटे -

यीशु ने कहा, "घर वापस जाओ और बताओ परमेश्वर ने तुम्हारे लिए क्या किया

हैÆ। इसलिए वह व्यक्ति जाकर शहर में सबको बताने लगा यीशु ने उसके लिए क्या किया। उसने उनसे कहा, æt' ;f/] hut d]+ hfs/ ;f/L ;[li6 s] nf]uf]+ sf] ;';dfrf/ k|rf/ s/f]. hf] ljZjf; s/] cf}/ alKt:df n] p;L sf p4f/ xf]uf.

oLz' s] ;fy ljZjf;of]Uo ag] /x]+.